



भारत में गठबंधन की राजनीति : एक विश्लेषक

प्रवीण कुमार ^{1*}, डॉ. मंजू सोलंकी ²

1. रिसर्च स्कॉलर, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, उत्तरप्रदेश, भारत
praveen10@gmail.com ,

2. एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, उत्तरप्रदेश, भारत

सारांश: गठबंधन की राजनीति भारतीय राजनीति का एक मुद्दा है। भारतीय राजनीति गठबंधन की राजनीति में तालमेल बिठाने की पूरी कोशिश कर रही है। सरकार का लोकतांत्रिक स्वरूप जनता की राय पर निर्भर करता है और इसके निर्वाचित नेता को सरकार में सर्वोच्चता प्राप्त होती है। जब सभी दल जो एक विशेष सामान्य न्यूनतम कार्यक्रम को लागू करने के लिए मिलकर काम करने पर सहमत होते हैं, लेकिन एक नई पार्टी बनाने के लिए विलय नहीं करते हैं, तो यह कहा जा सकता है कि उन्होंने गठबंधन सरकार बना ली है। गठबंधन सरकार सरकार का एक नया रूप है और सत्ता साझा करने का एक साधन है। संविधान छोटे और क्षेत्रीय दलों को विचारों की अभिव्यक्ति और लोकतांत्रिक अधिकारों का अवसर देता है। गठबंधन सरकार लोकतंत्र को बढ़ावा देती है और एक प्रतिनिधि प्रशासन है। हालाँकि, कभी-कभी चुनाव की घोषणा के बाद गठबंधन सरकार का गठन किया जाता है जिससे प्रतिनिधि सभा में बहुमत प्रदान करने के उद्देश्य से खरीद-फरोख्त को बढ़ावा मिलता है। इसके अलावा, गठबंधन सरकार के भीतर अंतर्निहित जटिलताएँ और तनाव शासन और प्रशासन में समस्याएँ पैदा करते हैं। यह देश की संघीय राजनीतिक व्यवस्था है जो गठबंधन सरकार की वृद्धि और विकास के लिए जिम्मेदार है।

मुख्य शब्द: गठबंधन, सरकार, राजनीति, लोकतांत्रिक, पार्टियाँ, चुनाव।

----- X -----

परिचय

आजादी के ठीक बाद, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एकमात्र राष्ट्रीय पार्टी थी जिसे लोगों में लोकप्रियता और सम्मान मिला। इस पार्टी का निरुसंधेह भारत में जनाधार और जमीनी स्तर था। यह 1947 से 1967 तक केंद्र और राज्यों दोनों में सत्ता में रही और इसका चरित्र एक अखंड था। लेकिन, इसका गठबंधन चरित्र भी था। कांग्रेस महान ऐतिहासिक पृष्ठभूमि वाला एक महागठबंधन था। ऐसा इसलिए था क्योंकि यह केंद्र की एक ऐसी पार्टी थी जिसका आधार वामपंथ की ओर था और जो आदर्शों के एक समूह का पालन करती थी, जिसे अन्य दलों और समूहों द्वारा साझा किया जाता है, चाहे वे दक्षिणपंथी हों या वामपंथी। [1]

कांग्रेस संगठन के गठबंधन चरित्र ने एक प्रमुख मॉडल का गठन किया जो जहां तक संभव हो सत्ता में परिवर्तन की अनुमति दिए बिना इंट्रा और अंतर-पार्टी प्रतिस्पर्धी-सह-गठबंधन मॉडल प्रदान करता है। इसने एक बहुत ही अजीब स्थिति पैदा कर दी जिसमें गैर-कांग्रेसी दलों ने अनिवार्य रूप से कांग्रेस के भीतर के समूहों के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम किया ताकि वे एकल-प्रमुख पार्टी प्रणाली में नेतृत्व परिवर्तन लाने के लिए अपने असंतोष और शिकायतों को व्यक्त कर सकें। यह अगस्त 1969 के राष्ट्रपति चुनाव से स्पष्ट है। अपेक्षाकृत कनिष्ठ कांग्रेसियों (जिन्हें यंग तुर्क कहा जाता है) के एक समूह ने वामपंथी संगठनों को आकर्षित किया, जिन्होंने आधिकारिक कांग्रेस उम्मीदवार को हराने के लिए एक व्यावहारिक गठबंधन बनाया। पुराने समर्थकों (सिंडिकेट के रूप में जाना जाता है) ने गैर-आधिकारिक कांग्रेस उम्मीदवार को हराने के लिए खुद को दक्षिणपंथी ताकतों से जोड़ लिया। [2]

जवाहरलाल नेहरू की अंतरिम सरकार कांग्रेस और मुस्लिम लीग का गठबंधन थी। शायद 1969 में कांग्रेस के विभाजन के बाद केंद्रीय स्तर पर एक आभासी गठबंधन भी था। कांग्रेस के साथ सीपीआई और डीएमके कमोबेश स्थिर साझेदारों के साथ-साथ कुछ अस्थायी साझेदार थे, जिन्होंने मुद्दे दर मुद्दे इसके साथ हाथ मिलाना चुना। [3] केंद्र में पहली जनता सरकार का गठन उसके घटक राजनीतिक समूहों की उदार भावना का परिणाम था, जो इस बात पर सहमत थे कि उनके मंत्रिमंडल में प्रत्येक के दो सदस्य होंगे। केंद्र सरकार के गठन के समय गठबंधन के भीतर सत्ता संघर्ष शांत था, एक बार जब मोरारजी देसाई को प्रधान मंत्री चुना गया, तो केंद्र में विविध राजनीतिक तत्वों को संतुलित करना उन पर निर्भर था। लेकिन

उन्होंने अपनी सलाह रखी और अपने मंत्रिमंडल को अपने अंध समर्थकों से भर दिया। [4]

गठबंधन के अन्य समूहों ने इस पर नाराजगी जताई। जुलाई 1979 में जनता गठबंधन ताश के पत्तों की तरह ढह गया जब जॉर्ज फर्नांडीस, एच.एन. बहुगुणा, बीजूपथिक और मधुलिमये जैसे विभिन्न समूहों के नेताओं के जाने के साथ दलबदल की बाढ़ आ गई। यहां तक कि अकाली दल और एडीएमके जैसे क्षेत्रीय समूहों ने भी अपना समर्थन वापस ले लिया। अक्टूबर 1979 में चरण सिंह के प्रधान मंत्री के रूप में एक नई गठबंधन सरकार का गठन किया गया था। इस गठबंधन में स्पेक्ट्रम के एक छोर से दूसरे छोर तक के नेता और समूह शामिल थे - एक तरफ सीपीआई-एम और सीपीआई से लेकर जो करीबी थे बड़े व्यवसाय के लिए। लेकिन चूंकि राष्ट्रपति को पता था कि श्री चरण सिंह के पास पूर्ण बहुमत नहीं है, इसलिए उन्होंने उन्हें तीन सप्ताह के भीतर सदन में विश्वास मत हासिल करने के लिए कहा। [5]

श्री चरण सिंह की अध्यक्षता वाली पार्टी दलबदलियों की पार्टी थी और उसे लोकसभा में एक पार्टी के रूप में मान्यता नहीं दी गई थी। परिणामस्वरूप, श्री चरण सिंह का मंत्रालय अधिक समय तक नहीं चल सका। लोकसभा का सामना करने से पहले श्री चरण सिंह ने राष्ट्रपति को अपना इस्तीफा दे दिया क्योंकि उनके एक गठबंधन सहयोगी (कांग्रेस-आई) ने उनकी सरकार से अपना समर्थन वापस ले लिया था, लेकिन उन्होंने राष्ट्रपति को लोकसभा भंग करने और मध्यावधि चुनाव का आदेश देने की सलाह दी। [6] 1989 में नौवें लोकसभा चुनावों के बाद, देश ने केंद्र में पहली अल्पसंख्यक-सह-गठबंधन सरकार देखी, हालांकि इसे अधिकांश सांसदों का समर्थन प्राप्त था, लगभग सभी गैर-कांग्रेसी समूह-बड़े और छोटे, दक्षिणपंथी और वामपंथी इसमें शामिल हो गए। वी.पी. के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय मोर्चे का समर्थन करने के लिए हाथा सिंह. प्रधान मंत्री के रूप में वी.पी. सिंह ने कहा कि उनकी अल्पमत गठबंधन सरकार है, जिसे नेशनल फ्रंट, भाजपा और सीपीएम के सहयोगियों का बहुमत समर्थन प्राप्त है। अक्षर दो मूल रूप से एक-दूसरे के प्रति शत्रुतापूर्ण हैं और। [7]

दिलचस्प बात यह है कि यदि दूसरा राष्ट्रीय मोर्चा के साथ सत्ता का सह-भागीदार बन जाता है तो दोनों में से कोई भी सरकार का समर्थन नहीं करेगा। 1990 के मध्य में भाजपा ने अपना समर्थन वापस ले लिया और वी.पी. सिंह सरकार सदन में हार गयी। वी.पी. सिंह की गठबंधन सरकार ग्यारह महीने तक सत्ता में रही। इस सरकार के कामकाज के बारे में राष्ट्रपति वेंकटरमन निरीक्षण करते हैं। "यह मेरी धारणा है (यदि वी.पी. सिंह ने एक-दूसरे को नष्ट करने वाली पार्टियों के समूह पर निर्भर रहने के बजाय स्पष्ट बहुमत वाली सरकार का नेतृत्व किया होता, तो उन्होंने देश को एक अच्छा प्रशासन दिया होता। [8] अलग-अलग उद्देश्यों वाली पार्टियों पर निर्भर रहना और विचारधाराओं के कारण, वह असंतुष्ट समूहों के दबाव का सामना नहीं कर सके। वी.पी. सिंह सरकार के पतन के बाद कांग्रेस के समर्थन से श्री चन्द्रशेखर प्रधान मंत्री बने। कांग्रेस ने अपना समर्थन वापस ले लिया और चन्द्रशेखर ने 6 मार्च, 1991 को इस्तीफा दे दिया। [9]

भारत ने गठबंधन राजनीति के युग में प्रवेश किया क्योंकि कई आम चुनावों में तीसरी बार त्रिशंकु सदन उभरा। लेकिन पिछले दो दौर के विपरीत, फैसला स्पष्ट होता नहीं दिख रहा। राष्ट्रीय पार्टियों में, केवल कांग्रेस और भाजपा ने 301 सीटें जीतीं, जबकि जनता दल और सीपीआई (एम) सहित पांच अन्य राष्ट्रीय पार्टियों ने 102 सीटें हासिल कीं। शेष 140 सीटें तीन निर्दलीयों के अलावा क्षेत्रीय और छोटी पार्टियों द्वारा साझा की गईं। [10] कांग्रेस के नेतृत्व वाले तीन प्रमुख राष्ट्रीय गठबंधनों के साथ। भाजपा और जेडी 543 के सदन में साधारण बहुमत से बहुत दूर विफल रहे, छोटे दलों ने संख्या के खेल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस घटना में, एच. डी. देवेगौड़ा की संयुक्त मोर्चा सरकार को समर्थन देने के लिए कांग्रेस के अलावा बाहर से समर्थन की जरूरत पड़ी, जिसमें से 13 को समर्थन मिला। [11] संयुक्त मोर्चे के पास लोकसभा में कोई कामकाजी बहुमत नहीं था। कांग्रेस के सामने चुनाव धर्मनिरपेक्षता और सांप्रदायिकता की ताकतों के बीच था। देवेगौड़ा के नेतृत्व वाली एक धर्मनिरपेक्ष सरकार का विकल्प चुना गया, जिन्हें इसके घटकों द्वारा सर्वसम्मति से संसद में यूएफ के नेता के रूप में चुना गया था। [12]

धर्मनिरपेक्ष राजनीति की राजनीतिक मजबूरियों के कारण, केंद्र में सीपीआई (एम) और कांग्रेस द्वारा बाहर से समर्थित गठबंधन सरकार का एक अलग पैटर्न विकसित हुआ है। संयुक्त मोर्चा गठबंधन सरकार का नेतृत्व एच.डी. देवेगौड़ा उस रथ की तरह थे जिसे समय-समय पर 13 घंटे अलग-अलग दिशाओं में खींचा जाता था और 11 अप्रैल, 1997 को देवेगौड़ा सरकार गिर गई। फ्रंट की संचालन समिति द्वारा गुजराल की उम्मीदवारी के समर्थन ने एक नए यूएफ गठबंधन के गठन के लिए मंच तैयार किया। [13] सत्ता की अत्यधिक भीड़ भरी दौड़ में, गुजराल वाम दलों के साथ-साथ

जनता दल और तेलुगु देशम के सहमत उम्मीदवार के रूप में पापी बनकर उभरे थे। गुजराल गठबंधन के पतन के बाद यूएफ सहयोगियों के बीच एक बात पर आम सहमति थी: सज्जन गुजराल एक पार्टी का नेतृत्व करने के लिए अयोग्य हैं, सरकार छोड़ दें। यह पहली बार है कि सरकार का नेता अपने कैबिनेट मंत्रियों, गठबंधन सहयोगियों और पार्टी सहयोगियों की नजर में संदिग्ध है। इससे पहले कभी भी किसी निवर्तमान पून मंत्री को चुनाव में अपनी पार्टी या गठबंधन का नेतृत्व करने का वैध मौका नहीं मिला है। [14]

क्रियाविधि

यह विश्लेषण प्रतिष्ठित प्रकाशित स्रोतों जैसे इंटरनेट पर विभिन्न पुस्तकों और वेबसाइटों, समाचार पत्रों, लेखों, विभिन्न अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं, पत्रिकाओं से लिए गए माध्यमिक डेटा पर आधारित है और सभी डेटा पर मातृात्मक और गुणात्मक तकनीकों के माध्यम से चर्चा की गई थी। इस क्षेत्र में अनुमानित पद्धति जो प्राथमिक और माध्यमिक अनुसंधान का एक संयोजन है।

उद्देश्य

- भारत में गठबंधन सरकारों का मूल्यांकन करना;
- गठबंधन की राजनीति और राजनीतिक विचारधारा को समझना;
- गठबंधन की राजनीति और पार्टी घोषणापत्र पर आलोचनात्मक चर्चा करना;
- भारत में गठबंधन राजनीति की चुनौतियों का आकलन करना।

परिणाम

• भारत में गठबंधन सरकार का मूल्यांकन

आजादी के बाद, दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र पर काफी हद तक एकल सबसे बड़ी पार्टी, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का शासन रहा है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा और यह भारतीय संसदीय प्रणाली के सबसे संगठित राजनीतिक दलों में से एक है। संगठित कांग्रेस पार्टी ने आजादी के बाद से 1977 तक भारत पर बिना किसी समानांतर या प्रतिस्पर्धा के शासन किया और एक प्रमुख एकदलीय राजनीतिक प्रणाली की तरह, उसे पूर्ण शक्ति का आनंद मिला।

स्वतंत्र भारत में संघ स्तर पर गठबंधन सरकार का पहला अनुभव 1977 से मिलता है जब गैर-कांग्रेसी ताकतें जनता पार्टी के नाम पर मोराजी देसाई के नेतृत्व में एकजुट हुईं। दूसरा गठबंधन जुलाई 1979 में श्री चरण सिंह के प्रधान मंत्री के रूप में बनाया गया था। चरण सिंह सरकार को वामपंथी दलों का समर्थन प्राप्त था। चौधरी चरण सिंह 28 जुलाई 1979 से 14 जनवरी 1980 तक भारत के प्रधान मंत्री रहे। तीसरा गठबंधन किसके नेतृत्व में नेशनल फ्रंट के नाम से बना

वी.पी. सिंह ने दिसंबर 1989 में वी.पी. सिंह सरकार को भाजपा और तत्कालीन सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस ने समर्थन दिया था, जिसने एक राजनीतिक रणनीति के तहत सरकार नहीं बनाई थी, और सीपीआई, सीपीआई (एम) और आरएसपी ने भी समर्थन दिया था। चौथा गठबंधन कांग्रेस (आई), एआईएडीएमके, बीएसपी, मुस्लिम लीग, जम्मू-कश्मीर नेशनल कॉन्फ्रेंस, केरल कांग्रेस, शिरोमणि अकाली दल और लोकसभा के कुछ स्वतंत्र सदस्यों की मदद से श्री चंद्र शेखर के नेतृत्व में बनाया गया था। अपने कुछ महीनों के कार्यकाल के दौरान उन्होंने एक अच्छी छवि बनाई।

पांचवें गठबंधन का गठन एच.डी. के नेतृत्व में हुआ। संयुक्त मोर्चा सरकार के बैनर तले देवगौड़ा। संयुक्त मोर्चा 13 राजनीतिक दलों की गठबंधन सरकार थी जिसमें कांग्रेस और सीपीआई का बाहरी समर्थन शामिल था, और अन्य राजनीतिक दल समाजवादी पार्टी, असम गणपरिषद, तमिल

मनीला कांग्रेस, तेलुगु देशम और अन्य थे। छठा गठबंधन आई.के. के नेतृत्व में बना। गुजराल जो 21 अप्रैल 1997 से 19 मार्च 1998 तक रहे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 28 नवंबर को उनकी सरकार से समर्थन वापस ले लिया। ऐसे में गुजराल ने अपना इस्तीफा राष्ट्रपति के.आर. को भेज दिया। नारायणन।

सातवें गठबंधन का नेतृत्व ए.बी. ने किया। वाजपेयी 19 मार्च 1998 से 10 अक्टूबर तक 1999. बीजेपी के नेतृत्व वाले गठबंधन को एआईएडीएमके, बीजेडी, एके, पीएमके, टीआरसी और अन्य ने समर्थन दिया था। यह सरकार ज्यादा दिन नहीं चली। आठवें गठबंधन का गठन ए.बी. के प्रधानमंत्रित्व में हुआ। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के तहत 11 अक्टूबर 1999 से 21 मई 2004 तक वाजपेयी। प्रमुख राजनीतिक दल भाजपा थी, लेकिन अन्य 23 राजनीतिक दलों ने इस गठबंधन का समर्थन किया। अन्य समर्थक दल अन्नाद्रमुक, टीडीपी, एनसी, टीएमसी, एसएके, एसएन और अन्य थे। इसने संसद का पूरा कार्यकाल चलाया।

नौवां गठबंधन 2004 में संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन के नाम से डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में बनाया गया था और इसे राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी, राष्ट्रीय लोक दल, नेशनल कॉन्फ्रेंस, केरल कांग्रेस, राष्ट्रीय जनता दल, समाजवादी पार्टी, बहुजन समाजवादी का समर्थन प्राप्त था। पार्टी, वामपंथी दल और अन्या दसवां गठबंधन वर्ष 2009 में डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में बना, जो यूपीए-2 था। समर्थित दल टीएमसी, जेडी, राजद, बीएसपी और एसपी थे। सभी दलों ने गठबंधन बनाने का फैसला किया ताकि अगले पांच वर्षों में भाजपा सरकार की किसी भी संभावना को दूर रखा जा सके।

वर्ष 2014 में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में ग्यारहवां गठबंधन बना, इस सरकार को एनडीए-2 कहा गया। वह भारत के 15वें प्रधान मंत्री हैं, 2014 में अपने कार्यकाल की शुरुआत के बाद से, उन्होंने भाजपा का नेतृत्व किया और 28 राजनीतिक दलों जैसे कि शिव सेना, शिरोमणि अकाली दल, नागा पीपुल्स फ्रंट, लोक जनशक्ति पार्टी, राष्ट्रीय लोक समता पार्टी, महाराष्ट्रवादी ने समर्थन किया। गोमोंटक पार्टी, देसिया मुरपोक्कु द्रविड़ कडगमा 16 मार्च 2018 को तेलुगु देशम पार्टी ने एनडीए-2 छोड़ दिया। 1999 के आम चुनाव के बाद केंद्र में सरकार बनाने के लिए सत्ता में आने वाला यह पहला एनडीए गठबंधन है।

• गठबंधन की राजनीति और राजनीतिक विचारधारा

गठबंधन सरकार एक संसदीय सरकार का एक मंत्रिमंडल है जिसमें कई या एकाधिक राजनीतिक दल गठबंधन बनाने के लिए एक साथ आते हैं, और गठबंधन या गठबंधन के भीतर एक-दल के प्रभुत्व को कम करते हैं। इस गठबंधन का मुख्य कारण यह है कि कोई भी पार्टी अपने दम पर संसद में बहुमत हासिल नहीं कर सकती। अधिकांश गठबंधन सरकारें युद्धकाल या आर्थिक संकट जैसे तात्कालिक आधार पर बनती हैं, आजादी के बाद कांग्रेस पार्टी लंबे समय तक केंद्र सरकार पर काबिज रही। राष्ट्रीय स्तर पर पहली गठबंधन सरकार प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री मोराजी देसाई के नेतृत्व में बनी, जो 24 मार्च 1977 को अस्तित्व में आई और 28 जुलाई 1979 तक चली। 24 मार्च 1977 से, जब भारत ने श्री मोराजी देसाई के नेतृत्व में पहली गठबंधन सरकार देखी। 2018 तक हम देखते हैं कि ज्यादातर गठबंधन सरकारें हैं और अंतिम परिणाम यह है कि उनकी राजनीतिक विचारधारा अस्तित्वहीन है, क्योंकि गठबंधन में वामपंथी दल, दक्षिणपंथी दल, जाति आधारित दल, सांप्रदायिक राजनीतिक दल, क्षेत्रीय दल और भाषाई दल- सभी होते हैं। उनमें से एक ही छतरी, गठबंधन सरकार के तहत आती है। हालाँकि, यह सच है कि गठबंधन की राजनीति के कारण क्षेत्रीय दलों का उदय हुआ है। इस उदार लोकतांत्रिक व्यवस्था ने उन्हें सशक्त बनाया है।

• गठबंधन की राजनीति और पार्टी घोषणापत्र

केंद्रीय स्तर पर 1977, 1989, 1996, 1998 में गठबंधन सरकारें बनीं लेकिन सभी सरकारें अपना संसदीय कार्यकाल पूरा करने में विफल रहीं। गठबंधन सरकारों की विफलताएँ कई कारणों से हुई हैं जैसे विभिन्न राजनीतिक विचारधाराएँ, क्षेत्रीय हित, सत्ता साझा करने की मानसिकता की कमी, व्यक्तिगत अहंकार और अन्या। इन सबके बावजूद 1999 में अटल बिहारी वाजपेई के नेतृत्व में केंद्रीय स्तर पर पहली सफल गठबंधन सरकार

की स्थापना हुई। फिर 2004 और 2009 में कांग्रेस ने डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन के बैनर तले गठबंधन सरकारें बनाईं। इस अवधि में प्रत्येक राजनीतिक दल को यह एहसास हुआ कि समकालीन भारतीय राजनीति में एक पार्टी की सरकार बनाना बहुत कठिन है, इसलिए गठबंधन सरकार ही अंतिम विकल्प है, गठबंधन युग में किसी भी पार्टी का घोषणापत्र कम महत्वपूर्ण नहीं होता है। गठबंधन सरकार एक सामान्य न्यूनतम कार्यक्रम के साथ मिलकर काम करती है क्योंकि सामान्य न्यूनतम कार्यक्रम एक गठबंधन सरकार के न्यूनतम उद्देश्यों को रेखांकित करने वाला एक दस्तावेज है।

• भारत में गठबंधन राजनीति की चुनौतियाँ

गठबंधन सरकार कम पारदर्शी होती है, क्योंकि किसी भी एक पार्टी के पास अकेले सरकार बनाने का वास्तविक मौका नहीं होता है। चुनाव से पहले उन्होंने जो पार्टी घोषणापत्र जनता के सामने पेश किया था वह गठबंधन सरकार के गठन के समय व्यावहारिक रूप से अवास्तविक है और यह पार्टियों का बहुत बुरा अनुभव रहा है क्योंकि कोई भी पार्टी अपने लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकती है।

सरकार बहुत अस्थिर होती है, अक्सर गिरना और दोबारा चुनाव होना गठबंधन सरकार की स्वाभाविक घटना है। भारत में केंद्र में कई गठबंधन सरकारें गिर गईं जैसे मोरारजी देसाई, चरण सिंह, वी.पी. सिंह, चंद्र शेखर, एच. डी. देवेगौड़ा, आई.के. गुजराल और अटल बिहारी वाजपेयी सरकार।

निश्चित सिद्धांतों और विशिष्ट विचारधारा वाली एक ही पार्टी द्वारा बनाई गई सरकारों की तुलना में गठबंधन सरकारें निश्चित रूप से बहुत कम प्रभावी, गैर-टिकाऊ और गैर-भरोसेमंद होती हैं।

गठबंधन सरकार में सभी राजनीतिक दलों के विधायकों और सांसदों को मंत्रालय/विभाग दिए जाते हैं और मंत्री नियुक्त किया जाता है। इन मंत्रियों की नियुक्ति मूल पार्टी की सिफारिश पर, बिना किसी पूछताछ या किसी शैक्षिक योग्यता या आपराधिक रिकॉर्ड के की जाती है।

गठबंधन सरकारों ने क्षेत्रवाद को जन्म दिया क्योंकि कोई भी राजनीतिक दल, विशेष रूप से क्षेत्रीय राजनीतिक दल और स्थानीय नेता क्षेत्रीय भावनाओं का शोषण करते हैं, वे अपने चुनावी घोषणापत्रों और राजनीतिक और क्षेत्रीय विकास के वादों में क्षेत्रीय समस्याओं को महत्व देते हैं। ये भारत में गठबंधन सरकार के बुरे उदाहरण रहे हैं।

खरीद-फरोख्त भारत में गठबंधन सरकार का एक और अवगुण है। इस बात पर व्यापक सहमति है कि राजनीतिक क्षेत्र में खरीद-फरोख्त अनैतिक और अवांछनीय है, और इसे अवैध होना चाहिए। आरोप है कि अविश्वास प्रस्ताव को प्रभावित करने के लिए खरीद-फरोख्त होती है।

निष्कर्ष

गठबंधन सरकार ने भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के एक नए चरण में प्रवेश किया है। आज के राजनीतिक परिदृश्य में, भारतीय संसदीय प्रणाली और बहुदलीय प्रणाली बहुत अधिक सहसंबद्ध हैं, और इसने भारत में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के चेहरे को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया है। आजकल, प्रत्येक क्षेत्रीय राजनीतिक दल केंद्र सरकार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, और सरकार और विपक्ष के बीच संबंध बदल गए हैं। यद्यपि यह तर्क दिया जा सकता है कि गठबंधन अच्छी सरकार प्रदान करता है क्योंकि उनके निर्णय अधिकांश लोगों के हित में किए जाते हैं, अक्सर यह देखा जाता है कि गठबंधन सहयोगियों द्वारा की गई विभिन्न माँगों, कभी-कभी अन्य गठबंधन सहयोगियों को नुकसान पहुँचाती हैं। सरकार के भीतर अत्यधिक तनाव और कानून बनाना असंभव बनाना इसके अलावा, एक एकल राष्ट्रीय नीति, जो किसी क्षेत्र के हित के विरुद्ध हो सकती है, तैयार नहीं की जा सकती है, यदि उस क्षेत्र से संबंधित कोई पार्टी सरकार का हिस्सा है। गठबंधन सरकार के प्रधानमंत्री की भूमिका

बहुत अलग होती है क्योंकि वह न तो अपने सहयोगियों का चयन कर पाते हैं और न ही उन पर अपना नियंत्रण रख पाते हैं। संसदीय प्रणाली में सामूहिक उत्तरदायित्व गठबंधन मंत्रिमंडल पर आता है जहां प्रधान मंत्री प्रधान मंत्री होता है, लेकिन गठबंधन सरकार में इस आदर्श को हासिल करना एकल पार्टी सरकार की तुलना में कठिन होता है।

संदर्भ

1. रिकर, डब्ल्यू.एच. (2018)। राजनीतिक गठबंधन का सिद्धांत (पृष्ठ 12)। न्यू हेवन, सीटी।
2. ऑग, एफ.ए. (2019)। गठबंधन सामाजिक विज्ञान के विश्वकोश में (पृष्ठ 600)। न्यूयॉर्क, एनवाई।
3. जौहरी, जे.सी. (2017)। भारतीय राजनीति पर विचार (पृ. 3-5)। नई दिल्ली, भारत।
4. पावटे, डी.सी. (2017)। गठबंधन सरकार: उनकी समस्याएँ और संभावनाएँ साहनी (पृ. 18) में।
5. फादिया, बी.एल. (2020)। भारतीय राजनीति में दबाव समूह (पृ. 202-223)। नई दिल्ली, भारत।
6. द हिंदुस्तान टाइम्स. (2017, 20 नवंबर)।
7. इंडिया टुडे. (2021)। (पृ. 35)
8. राजगोपालन, एस. (2021)। सुविधा का विवाह. हिंदुस्तान टाइम्स (रविवार पत्रिका)।
9. शंकर, के. (2019)। यूएफ गठबंधन: प्लास्टर छील रहा है। हिंदुस्तान टाइम्स।
10. इंडिया टुडे. (2017)
11. कुमार, ए. (2020)। टर्निंग प्वाइंट-1996 पोल स्टोरी (पृ. 26)। दिल्ली, भारत।
12. रमन, पी. (2021)। गठबंधन का युग. हिंदुस्तान टाइम्स।
13. कात्याल, के.के. (2018)। गठबंधन बनाकर काम करना. हिन्दू।
14. संसदीय सूचना जर्नल। (2019)। संसदीय सूचना जर्नल, 46(3), 388।